Research Paper

E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 7 | JULY 2024

आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अध्ययन आदत, एवं अभिभावक सम्बन्ध का अध्ययन

डॉ. आरती [1] | अनुराधा शर्मा [2]

[1] सहायक आचार्य, टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर.

[2] पी.एच.डी. शोद्यार्थी, टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर.

ABSTRACT:

प्रस्तुत शोध में ''आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अध्ययन आदत एवं अभिभावक सम्बन्ध का अध्ययन'' के संदर्भ में अध्ययनकिया गया हैं। अध्ययन में प्राप्त आंकडों के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किये गए है। यह अध्ययन राजस्थान राज्य के बीकानेर, हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के आवासीय विद्यालयों के 300 (150 छात्रों व 150 छात्राओं) एवं गैर आवासीय विद्यालयों के 300 (150 छात्रों व 150 छात्राओं) विद्यार्थियों पर किया गया है। अध्ययन में अध्ययन आदत मापनी (एम. मुखोपाध्याय एवं डी.एन. सनसनवाल), अभिभावक सम्बन्ध मापनी (नलिनी राव) का उपयोग किया गया है। निष्कर्ष रूप में पाया गया कि आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के अध्ययन आदत एवं अभिभावक सम्बन्ध में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

KEYWORDS:

आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालय, अध्ययन आदत, अभिभावक सम्बन्ध, विद्यार्थी।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
26th July 2024	30th July 2024

प्रस्तावना :–

प्राचीन समय में शिष्य गुरु के पास उनके घर या आश्रम में रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे। जिसे गुरूगृह या गुरूकुल कहते थे। भगवान राम ने गुरू विश्वामित्र तथा श्रीकृष्ण ने संदीपन ऋषि के आश्रम में रहकर शिक्षा प्राप्त की। ये लोग इतने समर्थ थे कि वह अपने घर में रहकर शिक्षा प्राप्त कर सकते थे, परन्तु उन्होंने भी आश्रमों या गुरूकुलों में जाकर शिक्षा प्राप्त की। राजमहल में रहने की अपेक्षा जंगल में रहकर विभिन्न कष्टों का सामना किया। इसका मुख्य कारण वास्तविक जीवन के लिये तैयार होना था। वर्तमान समय में आधुनिकीकरण के प्रभाव से गुरूकुलों तथा आश्रमों का स्वरूप बदल गया है जिसे हम छात्रावास कहते हैं।

छात्रावास दो शब्दों से मिलकर बना है– छात्र एवं आवास। अर्थात् छात्रावास वह स्थान है जहाँ छात्र सामूहिक रूप से रहते हैं तथा अध्ययन करते हैं। प्राचीन समय में गुरूकुल तथा आश्रमों का रहन–सहन थोड़ा कष्टप्रद था, क्योंकि उस समय वर्तमान जैसी सुख–सुविधाओं का अभाव था। परन्तु वर्तमान छात्रावासीय जीवन सुविधाओं से पूर्ण है। छात्रावासीय वातावरण सुविधापूर्ण भले ही हो फिर भी पहले की तरह ही छात्रों को अपने घर से एकदम नया वातावरण छात्रावासों में मिलता है।

छात्रावासीय जीवन के बिना छात्र का शैक्षिक जीवन अपूर्ण सा ही प्रतीत होता है। छात्रावासीय जीवन छात्र के जीवन का एक अभिन्न अंग है। छात्रावासीय जीवन में छात्र बहुत कुछ सीखता है। जिस प्रकार छात्र के व्यवहार पर छात्र के परिवार, विद्यालय तथा समाज का प्रभाव पडता हैं। उसी प्रकार छात्रावास में रहने वाले छात्रों पर छात्रावास का भी किसी न किसी रूप में प्रभाव पड़ता है।

छात्रावास में रहने वाले छात्रों में जो गुण सबसे पहले विकसित होता है, वह है– आत्मनिर्भरता। जब छात्र छात्रावास में रहने आते हैं तो उन्हें अपने सभी कार्य स्वयं करने होते हैं। परिवार में रहते हुये छात्रों को सोने, खाने, पढ़ने, घूमने और खेलने आदि कार्यों के बारे में समझाने के लिए उनके अभिभावक उपस्थित होते है। परन्तु छात्रावास में छात्रों को इन कार्यों पर सलाह देने के लिए अभिभावक नहीं होते हैं। छात्र को इन सबका निर्णय स्वयं लेना होता है। छात्रावास में छात्रों को अपनी सुविधा के साथ–साथ इस बात का भी ध्यान रखना होता है कि उसके कार्यों में दूसरों को किसी प्रकार की असुविधा न हो अन्यथा तनाव की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। छात्रावास में एक शैक्षिक वातावरण उपलब्ध होता है जो छात्रों को पढ़ने के लिए अभिप्रेरित करता है। छात्रावास प्रायः विद्यालय के परिसर में स्थित होते है। इससे विद्यालय आने जाने में लगने वाला समय बच जाता है जिसका उपयोग छात्र अपने अध्ययन में कर सकते है। छात्रावास में अलग–अलग धर्म, समुदाय एवं संस्कृति के छात्र एक साथ रहते हैं। विभिन्न जाति, धर्म, समुदाय एवं संस्कृति के छात्रों के एक–दूसरे के सम्पर्क में आने पर इसका प्रभाव उन पर पड़ता है। छात्र अपने धर्म, जाति व संस्कृति के साथ–साथ अन्य छात्रों की धर्म, जाति व संस्कृति के बारे में समझ प्राप्त करता है जिससे छात्र की सामाजिक समझ में वृद्धि होती है।

अध्ययन आदतों के द्वारा विद्यार्थियों को शिक्षा में श्रेष्ठतम बनाया जा सकता है, लेकिन वह तभी सम्भव है जब अध्ययन की आदतों पर पूर्ण ध्यान दिया जाये, क्योंकि अध्ययन के साथ अध्ययन आदतों का भी महत्वपूर्ण स्थान है। इसमें नियमित समय, अध्ययन के अनुकूल परिस्थितियों को विकसित करना, गहन एकाग्रता एवं तादात्मय, उपयुक्त समय सारणी, कार्य नियोजन, ज्ञान प्राप्ति के सामान्य नियमों का अनुपालन, विस्तृत एवं अतिरिक्त ज्ञान स्रोतों की प्राप्ति हेतु प्रगाढ़ इच्छा मौखिक और लिखित शाब्दिक व्यंजनाओं की सही अभिव्यक्ति के साथ–साथ सर्वाधिक महत्वपूर्ण परिस्थितिजन्य आत्मविश्वास और साहस मूल तत्व है। इस प्रकार अध्ययन प्रवृति व्यक्ति की इच्छा शक्ति का सुनियंत्रण, उच्च एवं उपयुक्त लक्ष्यों का निर्धारण तथा इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु क्षमताओं एवं योग्यताओं के उपयोग का कार्य कहते हैं।

प्रस्तुत शोध का महत्व :–

राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान करने वाली युवा शक्ति का निर्माण करने में उच्च शिक्षा महत्वपूर्ण योगदान देती है। उच्च शिक्षा स्तर पर छात्रों को भावी जीवन के लिए तैयारी तथा कुशल नागरिक बनने की शिक्षा प्रदान की जाती है। उच्च शिक्षा के द्वारा बालक के किसी एक पक्ष का नही बल्कि सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास किया जाता है। शिक्षा व्यवस्था से जुड़ी सभी ईकाईयां बालक के सर्वांगीण विकास में योगदान देती है। एक छात्र के रूप में शैक्षिक

क्रिया–कलापों में प्रतिभाग करने से छात्र का सामाजिक व्यवहार तो प्रभावित होता ही है, साथ ही शिक्षा के द्वारा व्यक्ति का सामाजिक तथा भावनात्मक विकास भी होता है। उच्च शिक्षा स्तर पर छात्रों को विभिन्न विषयों के ज्ञान में पारंगत बनाने के साथ–साथ उन्हें समाज में रहने के लिए भी तैयार किया जाता है। सामाजिक प्राणी के रूप में व्यक्ति समाज से जुड़े अभिकरणों से किस प्रकार सामंजस्य स्थापित करे, इस सबका दायित्व भी शिक्षा व्यवस्था पर ही होता है। समाज में रहते हुये व्यक्तियों से सम्बन्ध बनाये रखने तथा विभिन्न समूहों में अपने आपको स्थापित करने मे व्यक्ति की भावनाओं का भी बहुत महत्व होता है। किसी भी समूह के सदस्य बने रहने के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति दूसरों की भावनाओं को समझे तथा उनका सम्मान करे व्यक्ति के भावनात्मक विकास में भी शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। ज्ञान, समाज तथा भावनाएं छात्र जीवन के तीन महत्वपूर्ण पक्ष है। शिक्षा व्यवस्था द्वारा इन तीनों का ही विकास किया जाता है।

शोधकर्त्री ने प्रस्तुत शोध में इसी तथ्य का अध्ययन किया है कि शिक्षा व्यवस्था से जुड़े एक अभिकरण का इन तीनों पक्षों से कैसा सम्बन्ध है? इस प्रकार आवासीय विद्यालय भी शिक्षा व्यवस्था का एक अभिन्न अंग है। शिक्षा व्यवस्था में सुधार के लिए शिक्षक, शिक्षण विधि, पाठ्यक्रम तथा विद्यालय पर निरन्तर शोध कार्य होते रहे है। इन शोध का मुख्य उद्देश्य इन क्षेत्रों में आने वाली समस्याओं का समाधान करके शिक्षा व्यवस्था में सुधार करना होता है। यद्यपि आवासीय विद्यालय शिक्षा व्यवस्था का एक अभिन्न अंग है। परन्तु आवासीय विद्यालय शोध के क्षेत्र में मुख्य विषय अभी तक नहीं बन पाया है। जिस प्रकार छात्र के व्यवहार पर छात्र के परिवार, विद्यालय तथा समाज का प्रभाव पडता हैं। उसी प्रकार आवासीय विद्यालय में रहने वाले छात्रों पर छात्रावासीय वातावरण का भी किसी न किसी रूप में प्रभाव पडता है। शोधकर्ता के मन मे जिज्ञासा उत्पन्त हुई कि जैसे अन्य सामाजिक संस्थायें छात्रों पर प्रभाव डालकर उनके व्यवहार को प्रभावित करती हैं, क्या आवासीय विद्यालय या छात्रावास का भी उसी प्रकार छात्रों के व्यवहार पर कोई सार्थक प्रभाव पडता है? उच्च माध्यमिक स्तर के आवासीय / गैर आवासीय विद्यालयों के छात्र व छात्राओं के पर यह प्रवृत्तियाँ और सम्बन्ध किस स्तर तक विकसित हुआ है, इसे जानने के लिए प्रस्तुत विषय पर शोध करने की आवश्यकता प्रतीत हुई।

समस्या कथन –

"आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों अध्ययन आदत एवं अभिभावक सम्बन्ध का अध्ययन"

शोध शीर्षक में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

आवासीय विद्यालय –

प्रस्तुत शोधकार्य में आवासीय विद्यालयों से तात्पर्य उन विद्यालयों में सामान्यतया कक्षा 6 से 12 तक की कक्षाएं संचालित होती है। इन विद्यालयों में विद्याथियों को अवकाश के पश्चात विद्यालय परिसर में बने हुए आवासों में ही रहना पड़ता है उनके खाने–पीने रहने, सोने, खेलने की व्यवस्था विद्यालय मे ही होती है।

गैर आवासीय विद्यालय –

गैर आवासीय विद्यालयों से तात्पर्य उन विद्यालयों उन विद्यालयों से हैं जहाँ प्रतिदिन विद्यालय अवकाश के पश्चात विद्यार्थी अपने घर चले जाते है, विद्यालय समय के दौरान ही विद्यार्थी विद्यालय मे अध्ययन करते है।

विद्यार्थी – प्रस्तुत शोधकार्य में विद्यार्थियों से तात्पर्य आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालयों में उच्च माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों से है ।

अध्ययन आदत– अध्ययन आदतों में व्यक्ति नियमित समय अध्ययन के अनुकूल परिस्थितियों को विकसित करना, एकाग्रता एवं तादात्मय उपयुक्त समय सारणी, कार्य नियोजन, ज्ञान प्राप्ति के सामान्य नियमों का अनुपालन एवं अतिरिक्त ज्ञान स्रोतों की प्राप्ति हेतु आत्मविश्वास और साहस मूल तत्व है। अध्ययन आदतें वास्तव में अध्ययन के अनुकूल परिस्थितियों को विकसित करके और नवीन ज्ञान को प्राप्त करने के लिए छात्राओं द्वारा किया जाने वाला नियोजित प्रयास है, जो एक सुनिश्चित योजना के अनुसार होता है।

अभिभावक सम्बन्ध– बालकों की योग्यता, क्षमता, समायोजन, व्यवहार, आत्म–विश्वास, चरित्र, इच्छा शक्ति, अध्ययन आदतों आदि गुणों का विकास करने में सहायक होते हैं। बालकों बहुत सी योग्यताएँ, संस्कार एवं क्षमताएँ अपने अभिभावक से प्राप्त करती है।

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालयों मे अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का स्तर का अध्ययन करना।
2. आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालयों मे अध्ययनरत् विद्यार्थियों के अध्ययन आदत का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालयों मे अध्ययनरत् विद्यार्थियों के अभिभावक सम्बन्ध का स्तर का अध्ययन करना।
4. आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालयों मे अध्ययनरत् विद्यार्थियों के अभिभावक सम्बन्ध का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकपनाएँ :–

1. आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालयों मे अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का स्तर सामान्य पाया जाता है।
2. आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालयों मे अध्ययनरत् विद्यार्थियों के अध्ययन आदत में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।
3. आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालयों मे अध्ययनरत् विद्यार्थियों के अभिभावक सम्बन्ध का स्तर सामान्य पाया जाता है।
4. आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालयों मे अध्ययनरत् विद्यार्थियों के अभिभावक सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

न्यादर्श :–प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में राजस्थान के बीकानेर संभाग के बीकानेर, हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के आवासीय विद्यालयों के 300 (150 छात्रों व 150 छात्राओं) एवं गैर आवासीय विद्यालयों के 300 (150 छात्रों व 150 छात्राओं) विद्यार्थियों पर किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण :–

1. अध्ययन आदत मापनी (एम. मुखोपाध्याय एवं डी.एन. सनसनवाल),
2. अभिभावक सम्बन्ध मापनी (नलिनी राव)

प्रदत्तों का विश्लेषण व विवेचन –

1. **आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालयों मे अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का स्तर सामान्य पाया जाता है।**

सारणी संख्या – 1

fo|ky ;	dqy Nk=	Js.kh (70 o mlls de)	Js.kh (71&1 50)	Js.kh (151 ls v f/kd)	ifj.k ke
आवासीय विद्यालय	**300**	54	176	70	vkSlr Lrj
गैर आवासीय विद्यालय	**300**	62	187	51	vkSlr Lrj

व्याख्या :–परिकल्पना संख्या 1 के अनुसार दत्तों के विश्लेषण हेतु प्राप्त आकड़ों को प्रश्नावली के अंकों के आधार पर तीन श्रेणियों में विभक्त किया गया। श्रेणी (1) 70 व उससे कम श्रेणी (2) 71 – 150 श्रेणी (3) 151 व इससे अधिक। तीनों श्रेणियों में आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत 300 विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः 54, 176 व 70 है। श्रेणी 71 – 150 में विद्यार्थियों की सख्या अधिकतम है, अतः इस श्रेणी को विश्लेषण हेतु चुना गया। इसी प्रकार गैर आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत 300 विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः 62, 187 व 51 है। श्रेणी 71 – 150 में विद्यार्थियों की सख्या अधिकतम है। अतः इस श्रेणी को विश्लेषण हेतु चुना गया तथा **Z** का मान ज्ञात किया गया। जिसके इस आधार पर कहा जा सकता है कि शोधकर्त्री द्वारा निर्मित शून्य

परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। परिणामस्वरूप कहा जा सकता है कि आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालयों मे अध्ययनरत् विद्यार्थियों के अध्ययन आदत का स्तर सामान्य पाया जाता है।

2. आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालयों मे अध्ययनरत् विद्यार्थियों के अध्ययन आदत में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

सारणी संख्या – 2

संस्थान	संख्या	मध्यमान	प्रमापविचलन	टी मान	सार्थकता का स्तर
आवासीय विद्यालय	300	169.44	18.338	2.385	आंशिक स्वीकृत
गैर आवासीय विद्यालय	300	165.93	17.702		

परिकल्पना 2 के अनुसार आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालयों मे अध्ययनरत् विद्यार्थियों के अध्ययन आदत में अन्तर देखने हेतु विश्लेषित आकड़ों के आधार पर टी का मान ज्ञात किया गया जिसके अनुसार आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालयों मे अध्ययनरत् विद्यार्थियों के अध्ययन आदत के मध्यमान व प्रमाप विचलन के आधार पर प्राप्त टी मान सार्थकता के स्तर 0.01 से अधिक एवं 0.05 के सारणी मान से कम है। अतः यहॉ पर निर्धारित परिकल्पना स्वीकृत की जाती है और निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता है कि आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालयों मे अध्ययनरत् विद्यार्थियों के अध्ययन आदत में आंशिक अन्तर पाया जाता है।

1. **आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालयों मे अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का स्तर सामान्य पाया जाता है।**

सारणी संख्या – 3

fo|ky ;	dqy Nk=	Js.kh (300 ls de)	Js. kh (30 0&5 00)	Js.kh (500& 800)	Js.kh (800& 900)	Js.kh (9001s vf/kd)
आवासीय विद्यालय	300	4	22	157	76	41
गैर आवासीय विद्यालय	300	2	27	143	86	42

व्याख्या :–परिकल्पना संख्या 3 के अनुसार दत्तों के विश्लेषण हेतु प्राप्त आकड़ों को प्रश्नावली के अंकों के आधार पर पॉच श्रेणियों में विभक्त किया गया। श्रेणी (1) 300से कम श्रेणी (2) 300 – 500 श्रेणी (3) 500 – 800 (4) 800 – 900 (5) 900 व इससे अधिक। पॉचों श्रेणियों में आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत 300 विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः 4, 22, 157, 76 व 41 है। श्रेणी 500 – 800 में विद्यार्थियों की सख्या अधिकतम है, अतः इस श्रेणी को विश्लेषण हेतु चुना गया। इसी प्रकार गैर आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत 300 विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः 2, 27, 143, 86 व 42 है। श्रेणी 500 – 800 में विद्यार्थियों की सख्या अधिकतम है। अतः इस श्रेणी को विश्लेषण हेतु चुना गया तथा **Z** मान ज्ञात किया गया। जिसके इस आधार पर कहा जा सकता है कि शोधकर्त्री द्वारा निर्मित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। परिणामस्वरूप कहा जा सकता है कि आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालयों मे अध्ययनरत् विद्यार्थियों के अभिभावक सम्बन्ध का स्तर सामान्य पाया जाता है

4. आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालयों मे अध्ययनरत् विद्यार्थियों के अभिभावक सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

सारणी संख्या –3

संस्थान	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मान	सार्थकता का स्तर
आवासीय विद्यालय	300	746.48	22.103	3.159	स्वीकृत
गैर आवासीय विद्यालय	300	792.38	23.625		

परिकल्पना संख्या 3 के अनुसार आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालयों मे अध्ययनरत् विद्यार्थियों के अभिभावक सम्बन्ध में अन्तर देखने हेतु विश्लेषित आकड़ों के आधार पर टी का मान ज्ञात किया गया जिसके अनुसार आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालयों मे अध्ययनरत् विद्यार्थियों के अभिभावक सम्बन्ध के मध्यमान व प्रमाप विचलन के आधार पर प्राप्त टी मान सार्थकता के स्तर 0.01 एवं 0.05 के सारणी मान से अधिक है। अतः यहॉ पर निर्धारित परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है और निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता है कि आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालयों मे अध्ययनरत् विद्यार्थियों के अभिभावक सम्बन्ध में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

उपयोगिता –

शोध के परिणामों से कुछ शैक्षिक निहितार्थ उभरकर आते हैं, जो निम्न हैं :–

1. प्रस्तुत अध्ययन के द्वारा प्रधानाचार्य अपने विद्यालय में ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन कर सकते हैं, जिससे विद्यार्थियों में अध्ययन आदत का विकास हो सके।

2. शिक्षक निम्न अध्ययन आदतों को विकसित करने में विद्यार्थियों के साथ परस्पर विचार करके और आदान–प्रदान करके अध्ययन आदतों को विकसित करने में सहयोग दे सकते हैं।

3. प्रस्तुत अध्ययन के द्वारा अभिभावक विद्यार्थियों के विचारों और भावनाओं को समझकर सही निर्णय ले सकेंगे। उदाहरणार्थ अभिभावक दोस्तों, रिश्तेदारों के समान उन्हें अपमानित नहीं करें। **भावी शोध हेतु सुझाव –**

1. यह अध्ययन राजस्थान राज्य तक सीमित था। इसे पड़ौसी राज्यों के साथ जोड़ते हुए तुलनात्मक रूप दिया जा सकता है।
2. प्रस्तुत शोध कार्य केवल बीकानेर, हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले तक ही सीमित रखा गया है। अग्रिम शोध के लिए राजस्थान के अन्य जिलों के विद्यालयों को लिया जा सकता है।
3. प्रस्तुत शोध में मात्र 600 विद्यार्थियों का न्यादर्श लिया गया है। इससे बड़ा न्यादर्श भी लेकर अध्ययन किया जा सकता है।

REFERENCES

1. ओझा '' छात्रों की उपलब्धि प्रेरणा का माता पिता के साथ व्यवहार के साथ सम्बन्ध का अध्ययन, एम. बी. बुच सर्वे आफ रिसर्च इन एजूकेशन विस्तार''

2. गर्ग, चित्रा (2010), '' हाई स्कूल के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्धों, सामाजिक स्थिति एवं समायोजन का अध्ययन'' लखनऊ, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, सरस्वती कुंज, निरालानगर, अंक 1, जनवरी-जून, पृष्ठ 7-8

3. बुच, एम.बी.,1972-1978, सैकण्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

4. डॉ. अरोड़ा रीता, सुदेष मारवाह (2005) ''षिक्षा मनो विज्ञान एवं सांख्यिकी'' षिक्षा प्रकाषन जयपुर पृष्ठ संख्या (407-430)

5. तनवीर, आसिफ (2012), ''छात्रावास एवं गैर छात्रावासी छात्राओं के सामाजिक समायोजन एवं सृजनात्मकता पर अध्ययन'' शिक्षा शास्त्र, फैजाबाद, राम मनोहर लोहिया विश्वविद्यालय। अप्रकाशित शोध प्रबन्ध

6. डॉ. शर्मा, वी. एस. ''शिक्षा मनोविज्ञान'' साहित्य प्रकाशन आगरा (2004)

7. सुखिया, एस.पी. (1990) शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व. आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।

8. श्रीमती शर्मा आर. के. व दुबे कृष्ण, श्रीमती बरौलिया डॉ. ए. ''शिक्षा के मनावैज्ञानिकीय आधार'' राधा प्रकाशन मन्दिर आगरा, पृष्ठ सं. 239, 240